2000

सारथी

ज़रूरतमंद कलाकारों के मददगार

दोस्तों,

१४ अगस्त १९८८ को स्व० कमला देवी चटोपाध्याव जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकार की सहकारी समितियों की नई पीढ़ी को सोपा था । उस दिन से आज तक हम हर वर्ष एक ख़ास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं । आजादी शब्द जीवन का अन्तिम लक्ष्य स्पष्ट करता है। यह सपनों को पूरा करने का सुझाव देता है ।

इस वर्ष का विषय है.....

झूठ से आजादी

एक बार देहात के दौरे मे एक कला मण्डली दिखी, एक सुन्दर स्त्री सात अलग-अलग चालों में नृत्य पेश कर रही थी। एक स्वाभिमानीं मज़दूर लड़की जो राजा का प्रेम प्रस्ताव भी ठुकरा सकती है। लोग उसकी हर अदा पर तालियां बजा रहे थे। यह दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की एक पेंसठ साल का बुर्जग कलाकार था, बिना मेकअप के, चेहरे पर सिर्फ चूने का लेप ।

१० साल बाद वही कलाकार विलायत में अपनी कला पेश करते हुए दिखा। अब वह लड़की नही बल्कि एक सुन्दर रूप की भद्दी नकल लग रहा था । कारण ढली उम्र नहीं, उसका मेकअप और उसकी भावना थी। पहले वह अपने अन्दर की औरत को कला सहित बाहर लाता था अब वह साजसज्जा-वेषभूषा के ज़रिये औरत दिखना चाहता था। उसमें यह बदलाव कब आया ? तब जब उसने अपनी कला को टेलिवीज़न पर देखा । उसकी भूमिका मेकअप से लदी शहर की एक लड़की अदा कर रही थी। उसी क्षण से उसको अपनी कला में कमी लगी। वह अपने हुनर के प्रति भयभीत हो गया। अपनी ही नकल से क्यों डर गया? जो सम्मान अपनी कला के प्रति पहले उसके अंतर्मन में था अब क्यों नहीं रहा ?

यही डर गरीब कलाकारों में अक्सर देखने को मिलता है। जिसकी वजह समाज में हो रहे बदलाव की भी है। वह छोटी- छोटी नकली चीजों की मिलावट कर असली कला भूल जाता है, परिवर्तन के नाम पर मिलावट कर लेता है। शायद वह यह नहीं जानता कला में दिखावे से नही, भावनाओं और सृजनात्मक सोच से परिवर्तन होता है।

"ये कागज़ नहीं हिन्दुस्तान की पहचान है, आग में डालो तो जल जायेगा, पानी में डालो तो गल जायगा। मगर हमारे उस्ताद ने इसमें अनेक प्रकार की कलायें दिखाई हैं। एक कागज़ में समस्त भारत की तस्वीर उभर सकती है" इन संवाद के साथ जब चान्दबाबा रद्दी से लिए कागज़ के टुकड़ों को जोड़ कर सैकड़ों आकृतियां बनाते हैं तो दर्षक खुद ब खुद तालियाँ बजाने लगते हैं।

सृजनता मानव की एक अनुपम भेंट है, सत्य को पहचानने की एकमात्र शक्ति। कला तब उभरती है जब किसी भी क्रिया को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया जाये। इतिहास का आदि काल से कला व कलाकार के प्रति सम्मानित दृष्टिकोण रहा है। अपने हुनर के बल पर ही कलाकार समाज का दर्पण बना है। कुछ कलाकारों को राजे-रजवाड़ों द्वारा ऊंची पदवियाँ व जागीरें प्रदान की जाती थी। लेकिन वह कलाकार जिनकी पहुँच केवल गाँव की झोपड़ियों और शहर की गलियों तक ही थी क्या वे उच्च कोटि के कलाकार नही कहलाये जा सकते? इस सदी में भी लोग अक्सर कुछ कलाकारों को मंगतवरण मानकर भेदभावपूर्ण व्यवहार रखते हैं। कहीं कलाकार खुद इस का ज़िम्मेदार तो नही है? कुछ और बनने की चाह में अपनी ही सच्चाई तो नही भूला? उसने अपनी कला को बेचने के लिए कुछ मिलावट तो नही कर दी है? या वह कलाकार होने का दिखावा तो नही कर रहा है?

वर्तमान समय में दिखावा इतना विस्तार पा चुका है कि कला भी इसके भ्रमजाल में फंसती जा रही है। दिखावा झूठ का ही दूसरा रूप है। गरीब कलाकारों को जब रोटी

भी नसीब नही होती तो वह झूठ का सहारा लेते हैं। आज पारम्परिक कलाकारों के बच्चे कला का हल्का फुल्का प्रदर्शन कर लोगों को बेवकूफ बनाने की कोशिश करते हैं। अफसोस इस बात का है कि इन्हें अपना पारम्परिक हुनर भी ठीक से नही आता। जजमान जो कला की परख ही नही रखते देश की बहुमूल्य कला के नाम पर ऐसे लोगों को बढ़ावा दे रहे हैं जिससे अच्छे कलाकार का हौंसला कम होता जा रहा है और कला के मूल्य में भी गिरावट आती जा रही है। एक सच्चा कलाकार केवल अपनी कला के बल इस झूठ भरे बाज़ार में कैसे रोजी रोटी कमा सकता है ?

कला सत्य के अनुकरण के अतिरिक्त कुछ नहीं है। कला तभी पनपती है जब मन, मस्तिष्क और शरीर में एकाग्रता हो। आज के दौर में लोगों की यह मान्यता है कि झूठ के बग़ैर जीवन संम्भव नहीं हो सकता, लेकिन यह कहाँ तक सही है, आप ही बताइए? अगर जब कभी भी आपने झूठ की शुरूआत की होगी तब आप के अंतर्मन ने आपको जरूर रोका होगा, बताइए ये भावना क्या है ? यह भावना हमारी अध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत की देन है। इससे यही साबित होता है कि झूठ अप्राकृतिक है, केवल सत्य ही शाश्वत् व सभी कला धर्मीयों की बुनियाद है। समाज समझे न समझे एक अच्छे कलाकार को यह सत्य नही भूलना है।

कला केवल सुविधाओं की मोहताज नही बन सकती है। कलाकारों को चाहिए, वह अपनी कला के साथ पूर्ण न्याय करें। जिस तरह कला उसकी ज़िन्दगी का हिस्सा है उसी तरह अपनी ज़िन्दगी को कला का हिस्सा बनायें ।

हमें कला को झूठ से आज़ाद करने का प्रयास शुरू करना है। अगर हम कलाकार हैं तो अपनी ज़िन्दगी कला को समर्पित करेंगे और यदि हम कलाकार नहीं है तो कला एवं कलाकार को उसकी भूमिका निभाने में हर सम्भव प्रयास व मदद करेंगे।

राजीव सेठी

स्मृति

चन्द्रकला देवी-एक सच्ची कलाकार

मुम्बई के शाह हाउस में

पेपरमेशे और मिट्टी का इस्तेमाल सिर्फ रोज़मर्रा की ज़रूरतें व रिति-रिवाजों से जुड़ी चीज़े बनाने तक सिमित था। स्व० चन्द्रकला देवी ने इसी माध्यम को ले कर खिलौने व बड़ी-बड़ी मूर्तियों को जन्म दिया। कई समसामयिक कलाकारों के साथ मिल कर अपनी कला को नया रूप प्रदान किया और सारी दुनिया में पहुँचाया। अपना सारा जीवन मिथिला कला को समर्पित कर वह दुनिया के लिए उदाहरण बनी। अमेरिका के महान शिल्पकार नगूची ने स्व० चन्द्रकला देवी को हिन्दुस्तान का सबसे बेहतरीन कलाकार बताया।

आज स्व० चन्द्रकला देवी हमारे बीच नहीं है लेकिन हम उनका योगदान कभी नहीं भूलेंगे। हम स्व० चन्द्रकला देवी को भावभीनी श्रद्धान्जली देते है।

स्व० चन्द्रकला देवी श्री मंजीत बाबा के साथ

निमंत्रण

आप स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाने के लिए पारम्परिक कला की बस्ती में आमंत्रित हैं। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर यहां जादू की मंत्र मुग्ध विधाओं पर जमूरे के डायलौग, इशारों पर नाचती कठपुतली, के साथ स्वतन्त्रता दिवस समारोह में शामिल होने की कृपा करेंगे ।

कार्यक्रम :

१४ अगस्त २०००

०६:३० बजे प्रातः---------- झंडा रोहण, राष्ट्रगान
०६:३५ बजे प्रातः---------- अतिथि भाषण
०६:४५ बजे प्रातः---------- सांस्कृतिक कार्यक्रम
१०:४५ बजे प्रातः---------- बस्ती में सामुदायिक कार्यक्रम ।

कार्यक्रम स्थल -:भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली-११०००८ फोन ; 570 61 89

शुभकामनायें

विनीत

राजीव सेठी

(राजीव सेठी)

सारथी-फलेट 4, शंकर मार्किट नई दिल्ली -110001
फोन ; 3411107, 3413744 फेक्स; 3414065 ई-मेल;sarthi@nda.vsnl.net.in